- चतुर्थ अध्याय -

" शेवडे के नारी-पात्रों की विशेषताएँ "

– चतुर्थ अध्याय –

[illegible] के नारी-पात्रों की विशेषताएँ

अ) प्रस्तावना ।

ब) नारी-पात्रों की विशेषताएँ ।

१) भारतीय परम्परा का पालन करनेवाली नारी ।

२) निःस्वार्थ प्रेमिका के रूप में नारी ।

३) मातृत्व की इच्छा रखनेवाली नारी ।

४) सेक्स तथा भोगवादी दृष्टि रखनेवाली नारी ।

५) त्यागी बहनों की रूप में नारी ।

६) राजनीति में नारी सहयोग ।

७) समाज विद्रोही नारी ।

८) पुनर्जन्म पर विश्वास रखनेवाली नारी ।

९) आधुनिक नारियों के रूप में शिक्षित नारी ।

१०) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण ।

चतुर्थ - अध्याय

शेवडे के उपन्यासों में चित्रित नारी-पात्रों की विशेषताएँ।

शेवडे एक सफल रचनाकार है। नारी के विशाल एवं विस्तृत अंतर्जगत में प्रवेश कर नारी मन की सूक्ष्म मनोभावों को पाठक के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उन्होंने नारी पात्रों के बारे में भारतीय परंपरा, संस्कृति का दृष्टिकोण अपनाया हैं। मानवीय जीवन में पुरुष का जितना महत्व है, उतनाही नारी का भी महत्व है। उनके साहित्यमें नारी के बारे में माता, मातृत्व, बहन और पत्नी के रूपमें जो चित्रण हुआ है वह संपूर्णत: आदर्शवादी है। नारी जहाँ भूल करती है वहाँ उसका मन परिवर्तन भी किया है।

नारी का चित्रण करते समय शेवडे ने अपनी मर्यादा तथा संयम को नहीं छोडा। शेवडे के नारी पात्रों में भावनात्मक सहृदयता, मौलिकता आंतरिक संघर्ष, तथा मनोवैज्ञानिकता का समन्वय कुशलतासे हुआ है। शेवडे के नारी पात्रों को देखने के बाद उन नारी पात्रों की कुछ खास विशेषताएँ दिखायी देती है, जो निम्नलिखित है।

[१] भारतीय परंपरा का पालन करनेवाली नारी -

शेवडेने भारतीय परंपरा का पालन करनेवाली नारीयोंमें "निशागीत की नर्स सुशीला" को चित्रित किया हैं। वह भारतीय बाल विधवा थी; उसका वर्ताव रहन-सहन अत्यंत शालीनता का था। पर उसमें एक मातृ-वत्सलता का भाव था। सेवा का आदर्श था। इससे वह प्रेयसी, सखी, माता और कन्या भी बन सकती थी। वह देखने में

न सुंदर थी न कुरूप, फिर भी मधुसूदन उसकी और आकर्षित होता है, और उससे शादी करना चाहता है। तो वह "मैं आपसे उमर से आठ वर्ष बडी हूँ, अनुभव और भावनाओं में एक पीढी का अंतर है, आप मेरे सामने बच्चे हैं।" कहकर इन्कार कर देती है। एक प्रेमिका को अपने प्रियतम के लिए त्याग की भावना एक श्रेष्ठ सीमा तक पहुँचा देती है। क्योंकि त्याग ही प्रेम की कसौटी है। लेकिन जब अंतमें मधुसूदन अन्धा बन जाता है तब यही प्रेमिका उसके लिए मित्र प्रेयसी और माता बन जाती है, और उसकी सेवा करती रहती है। नर्स सुशीला में त्याग, बलिदान, सेवा तथा सामाजिक तत्वों की श्रेष्ठता दिखाई देती है।

[२] निस्वार्थ प्रेमिका के रूप में नारी -

शेवडे ने निस्वार्थ प्रेमिका के रूप में "मृगजल की मरियम" को चित्रित किया है। उसका अंतकरण स्फटिक जैसा निर्मल है, उसकी भावनाएँ ईश्वर भक्ति जैसी शुध्द है वह अशोक को शरीर का दान करती है, उससे तृप्त होती है, पर दोष नहीं देती। उसके शरीर का रोम-रोम मातृत्व के पवित्र और मंगलमय उत्तरदायित्व से आनंदित हो उठता है। जब वीणा नामक नर्स उसके प्रेम को दोष देती है तो वह कहती है - "उनके बारे में बुरी कल्पना करना पाप है। उनके जैसा पुरुष मिलना असंभव है।"[२] इससे स्पष्ट होता है कि वह निस्वार्थी प्रेमिका है।

[३] मातृत्व की इच्छा रखनेवाली नारी -

शेवडे ने अपने उपन्यासों में मातृत्वकी इच्छा रखनेवाली नारियों में "मृगजल की मरियम", "इंद्रधनुष की वीणा", "पूर्णिमा की पूर्णिमा", इन नारियों को चित्रित किया है।

---

१) अ. गो. शेवडे, निशागीत पृ. १०८.
२] अ. गो. शेवडे, मृगजल, पृ. १५७.

"मृगजल की मरियम" चित्रकार अशोक से तृप्त होती है। उसका शरीर मातृत्व की पवित्रतासे आनंदित होता है। वह मातृत्व को ही नारी जीवन की परिसमाप्ति मानती है। अशोक जब उसके बच्चे को हाथ में लेकर उत्कटतासे चुम्बन लेता है, तब इस आनंद को देखकर मरियम पूर्ण मातृत्व शांतिमें समर्पित हो जाती है।

"इंद्रधनुष की वीणा" मातृत्व को धारण करने के लिए उसका मन छट पटा रहा था, पर पति से इच्छा पूरी न होने के कारण वह दलीप से पूर्ण कर लेती है। परंतु पति जब उसकी घृणा करने लगते हैं ~~करने लगते हैं~~, तब लफंगे, नीच, जानवर जैसे निकम्मे दलीप से विवाह करने के लिए तैयार होती है, लेकिन जीव हत्या जैसा पाप नहीं करती क्योंकि "माता तो सदैव वंद्य है, मातृत्व तो नित्य ही पूजा की वस्तु होती है। वह न होती तो यह सृष्टि कैसे जनमती।"[1]

"पूर्णिमा की पूर्णिमा" में भी यही वैचारिक कल्पना दिखाई देती है। वह जब विलास से गर्भ धारण करती है, और उसे विवाह पूर्व मातृत्व आता है तब भी वह "जीव हत्या" करने के लिए तैयार नहीं होती। इससे स्पष्ट हो जाता है कि, नारी भूल से गलती करती हैं परंतु उसका प्रायश्चित "जीवहत्या" में नहीं करना चाहती है।

[४] <u>सेक्स तथा भोगवादी दृष्टि रखनेवाली नारी</u> -

शेवडे ने सेक्स तथा भोगवादी दृष्टि रखनेवाली नारियोंमें "मृगजल की मायादेवी" "अधूरा-सपना" की सुहासिनी का चरित्र चित्रण उपस्थित किया है।

१] शं॰ना॰गुंजीकर, अ॰गो॰शेवडे,और उनकी साहित्य, पृ॰५०॰

मायादेवी सुंदर, धनवान थी। वह समाज से नफरत करती थी, क्योंकि किसी भी पुरुष ने उसकी ओर भोग विलास के अलावा देखा ही नहीं था। मायादेवी को न पति से सुख मिलता है, न अन्य पुरुषों से। इसलिए वह गिर जाती है। जब वह अशोक को अपना प्यार देना चाहती है और अशोक उससे नफरत करता है तब वह नागिन जैसे चिढ जाती है, और उसे अपने जाल में फँसाने के लिए अनेक प्रयत्न करती है। एक दिन तो वह उसके सामने अर्धनग्न परिस्थिति में खडी हो जाती है। यह अतृप्त नारी अशोक पर जोर जबरदस्ती करती है। उसका मन बदले की भावना से आखिर तक जलताही रहता है। उसके हर एक प्रयत्न उसकी सेक्स मनोवृत्ति के संकेत है।

"अधुरा सपना की सुहासिनी" भी सेक्स की पुतली है। इसलिए जानवर जैसे रामलाल की ओर आकर्षित हो जाती है।

[४] <u>त्यागी बहनों की रूप में नारी -</u>

शेवडे ने इस कोटी में "मंगला की मृणालिनी" "निशागीत की पद्मा" "मृगजल की मायादेवी" इनका चरित्र रेखांकित किया गया है।

"मृणालिनी" को सदानंद गुरु के समान था। वह हमेशा मृणालिनी को बहन सम्बोधित करता था। सदानंद के लिए विवाह का प्रस्ताव लाकर विवाह होने तक, और मंगला भाग जाने के उपरांत और उसके लौटने पर भी वह हमेशा उसकी मदद करती है। मंगला के दुःख से विव्हल पति सदानंद को संगीत की प्रेरणा देनेवाली उसकी अंतर आत्मा की चेतना को जागृत करनेवाली मृणालिनी ही थी। अत: माता तथा बहन बहनका त्याग और वात्सल्य उसमें पूर्ण रूपसे था।

"निशागीत की पद्मा" का चरित्र भी इसी कोटीका चित्रित किया गया है। वह डॉ॰ मधुसुदन और नर्स सुशीला की मदद करती है। डॉ॰ मधुसुदन अन्धा बननेपर पद्मा जिस लगन से उसकी सेवा करती है, उससे पद्मामें बहन के सर्व श्रेष्ठ गुण दिखाई देते हैं। उपन्यास के अंतमें नर्स सुशीला और डॉ॰ मधुसुदन दम्पत्ति का सुख देखकर उसकी आँखोंमें आनंदाश्रु आ जाते हैं। इसी प्रकार पद्मा बहन का निस्वार्थ प्रेम, और त्याग हमारी भारतीय बहनों के लिए एक आदर्श उदाहरण है।

"मृगजल की मायादेवी", भी पहले प्रेयसी थी। उसमें असफल हो जाने पर वह अन्त में बहन के रूप में हमारे सामने आ जाती है। मास्टर छोटे अशोक की सेवा और उसके लिए किया हुआ त्याग एक आदर्श नारी का है।

[६] राजनीतिमें नारी सहयोग -

शेवडे एक अच्छे साहित्यकार के साथ-साथ एक राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होने स्वयं ही स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया था। अत: उनके राजनीतिक उपन्यासोंमें पुरुषों के साथ-साथ नारियों ने भी भाग लिया था। इसके उदाहरण हमें "ज्वालामुखी" की विजया के चरित्र-चित्रण में मिलता है। विजया का चरित्र-चित्रण स्वाधिनता संग्राम की आत्माहुती है।

जो नवविवाहित होते हुए भी अपने पति के रास्ते में उसने कोई रूकावट नहीं पैदा की। क्योंकि वह नारीको बन्धन का नहीं, मुक्तिका प्रतीक मानती थी, कमजोरी का नहीं, शक्ति का प्रतीक मानती थी।

[७] समाज विद्रोही नारी -

शेवडेने समाज विद्रोही नारियों के रूपमें "मंगला की मंगला" "मृगजल की मायादेवी" को चित्रित किया है।

"मंगला की मंगला" के कुंडली में "मंगल" गृह होने के कारण अन्ध श्रध्दा में समाज उसे विवाहित होने नहीं देता। उसका हृदय कराह हो उठता है। वह सोचती है- मेरा पति धनवान न हो, पर वह सर्व साधारन मानव हो पर मंगला का दुर्दैव यही था कि उसकी शादी अधि संगीत तज्ञ के साथ कि जाती है। इससे समाज के प्रति उसके मनमें एक कटुता का, एक सुक्ष्म विद्रोह की भावना चिनगारी के समान उत्पन्न होती है। और जब उसका पति सिनेमा, नाटक, होटल, फैशन की इच्छा तृप्त नही कर सकता तो यही भावना विद्रोह का उग्र रूप धारण करती है और कहती है - "मेरी आँखें तो अंधी नहीं है ?"[१] इसका बदला लेने के लिए वह चंद्रकांत नामक धनी परंतु सुंदर युवक के साथ भाग जाती है।

"मृगजल की मायादेवी" भी इसप्रकार की एक समाज विद्रोह नारी है। वह अपना विद्रोही मन प्रकट करते हुओ अशोक से कहती है, "मैं स्वीकार करती हूँ कि मेरे बारे में बारे में जो लोकोपवाद है वे सर्वथा झूठे नहीं हैं। परंतु क्या मेरी उस वृत्ति के पीछे जो मनो दशा है उसे आप समझ सकेंगे ? मैं प्रारंभ में बुरी नहीं थी, किंतु परिस्थितियों ने मुझे बुरा बनाया, इन परिस्थितियों के कारण मैं समाज से बदला लेना चाहती हूँ।"[२]

१] अ॰ गो॰ शेवडे, मंगला पृ, ४९॰
२] अ॰ गो॰ शेवडे, मंगला पृ॰ ९२॰

[८] पुनर्जन्म पर विश्वास रखनेवाली नारी -

शेवडे आस्तिकवादी तथा कर्मवाद पर विश्वास करने वाले व्यक्ति थे। वे हिंदू धर्म के पुनर्जन्म के सिध्दांत पर विश्वास रखते थे। पुनर्जन्म पर विश्वास रखनेवाली नारियोंमें उन्होंने निशागीत की नर्स सुशीला और "अधूरा सपना की सुहासिनी" को प्रस्तुत किया है।

"निशागीत" की विधवा नर्स सुशीला राजेश्वरी डॉ. मधुसूदन जैसे सुयोग्य प्रियतम की प्रेयसी बनने में खुद को धन्य मानती है। और सोचती है, "यह उसका पीछले जन्म का संचित पुण्य है, जो इस दिव्य प्रितिके रूप में उसकी अंजली में आ पडा है।"[१]

"अधूरा सपना" की सुहासिनी भी पूनर्जन्मपर विश्वास करती है, इसलिए वह गिरीश से कहती है - "नाराज मत हो गिरीश। काश तुम नारी का हृदय समझ पाते। वह जिसे चाहती है पर पा नहीं सकती उसे अगले जनम में जा सके इसके लिए तपस्या करती है।"[२]

[९] आधुनिक नारियों के रूप में -

शेवडेने आधुनिक नारियों के रूप में "पूर्णिमा की पूर्णिमा", "अधूरा सपना की सुहासिनी" इन को चित्रित किया गया है। इन नारियों में पाश्चात्य संस्कार तथा साहित्य की शिक्षा का परिणाम दिखायी देता है। ये नारियाँ धन से दम्पति प्रेम को नापना चाहती है।

१] अ.गो.शेवडे, निशागीत पृ. १००

२] अ.गो.शेवडे, अधूरा सपना, पृ. ११६.

अपने व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के सामने दूसरों की इच्छाओं, आकांक्षाओं को नफरत से देखती है, उनकी अवहेलना करने का प्रयत्न करती हैं।

"पूर्णिमा में विनयकुमार के बारे में अहंकार निर्माण हो जाता है, और वह विलासकुमार के फंदे में फंस जाती है। "अधूरा सपना" की "सुहासिनी" बी॰ए॰ तक पढी लिखी बैंक मैनेजर की कन्या थी, पर अपने अहंकार के कारण रामलाल के जाल में फँसकर अजन्मा दु:खी बन जाती है।

[१०] मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण -

शेवडे ने मनो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गयी नारियों में "इंद्रधनुष्य की वीणा", "मंगला की मंगला" "अधूरा सपना की सुहासिनी" "पूर्णिमा की पूर्णिमा""निशागीत की नर्स सुशीला" इन नारियों के चरित्र चित्रण को स्पष्ट किया है। इन नारियोंमें आंतरिक द्वंद्व तथा बाह्य द्वंद्व का सुंदर मानसिक चित्रण किया गया है। "वीणा" इंद्रधनुष की नारी पात्र है। वह एक फिलासफर की पत्नी है। पतिसे मातृत्व की इच्छा पूर्ण न होने से वह यौन तथा सेक्स की मूर्ति दलीप से अपनी दमित इच्छा पूर्ण कर लेती हैं और सामाजिक लांछन से बचने की इच्छा से और अपने मातृत्व की रक्षा के लिए विवाह का बंधन तोडकर दलीप से विवाह करना चाहती है, लेकिन दलीप तैयार नहीं होता, तो वह उसका तिरस्कार तथा घृणा करते हुए कहती है -"मैं अकेले ही अपनी किस्मत भोग लूंगी, मैं इस फूल से उस फूल पर फुदकनेवाली तितली नहीं हूँ। मेरी भी जीवन की कुछ धारणाएँ हैं। इससे तुम्हे क्या ? तुम जा सकते हो। अब तुम दुबारा इस तरह की बात जबान पर मत लाना वरना मेरा घोर अपमान होगा।

मैं इसे बर्दास्ता नहीं करूँगी।"[१] इस समय वीणा के मानसिक संघर्ष का तथा आन्तरिक द्वंद्व का कलात्मक चित्रण चित्रित किया है।

"मंगला की मंगला" भी एक खूबसूरत अहंवादी परंतु दुदैवी नारी है,जो सामाजिक दोषों के कारण तथा भविष्य के झूठी परम्परा के कारण एक अंधे के साथ विवाहित होती है। उसका पति जन्मत अंधा होने के कारण उसके बाहय शारीरिक सौंदर्य की प्रशंसा नहीं कर सकता। मंगला में सौंदर्य का "अहं" था, और यही उसकी कमजोरी भी थी। क्योंकि नारी केवळ सौंदर्य नहीं चाहती, वह उसका प्रदर्शन भी चाहती हैं। इसका फायदा उठाते हुए चंद्रकांत मंगला को अपने जाल में फांस लेता है, और एक दिन मंगला चंद्रकांत के साथ भाग जाती है। सदानंद उसकी वेदनामें जलकर संगीत सम्राट बन जाता है। जिससे वह फिरसे सदानंद को समर्पित हो जाती है। उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि, इच्छा तृप्ति के लिए विवाहित होते हुए भी अपने अंधे असहाय पति को छोडकर भाग जानेवाली और पति का वैभव देखकर समर्पित होनेवाली लाचार परंतु हृदय परिवर्तन की नारी मंगला है।

नर्स सुशीला राजेश्वरी सुंदर, सुडौल, सुशिक्षित युवक के प्रेम याचना को ठुकराकर प्रियतम की भलाई के लिए भाग जाती है, लेकिन प्रियतम अंधा तथा असाहय हो जाता हैं तो उसकी सहाय्यता के लिए उसके साथ जन्म जन्मांतर का नाता जोडकर अपना सुखी संसार प्रस्थापित करने के लिए फिर से वापीस आ जाती हैं। वह अभिशाप को ही वरदान मानती है।

१] अ.गो.शेवडे, इंद्रधनुष, पृ.१२०.

"अधूरा सपना" की सुहासिनी अत्यंत सुंदर लावण्यवती नारी है, लेकिन वह गिरीश से अपने अपमान का बदला लेना चाहती है, और वह यह दिखाना चाहती है कि अपने अहं की पूर्ति के लिए वह साधारण व्यक्ति से विवाहित होकर उसे सुधार सकती है, उसके साथ आनंद से रह सकती है। परंतु "अधूरा सपना" में यही नारी अंतमें पश्चाताप की आंतरिक अग्निमें जलती हुई नजर आती है, क्योंकि अंत में खुद वह कहती है कि "मैं हमेशा हरि मूर्ति के साथ-साथ अपने प्रियतम की मूर्ति आँखों के सामने खड़ी देखती हूँ।"[1] सुहासिनी का जीवन प्रति-स्पर्धा में जलनेवाली नारी का मनो वैज्ञानिक चित्रण है। यहाँ उसके चरित्र का अंतर बाह्य संघर्ष और मानसिक द्वंद्व का चित्रण अत्यंत मर्म स्पर्शी हुआ है।

"पूर्णिमा का चित्रण भी मनो वैज्ञानिक स्तर पर हुआ है। पूर्णिमा विलास से गर्भ धारण करती है, समाज उससे नफरत करता है फिर भी वह "जीव हत्या" का पाप नहीं करती। वह अपराध करती है, दूसरें से अवैध प्रेम संबंध रखती है/ फिर भी अवैध संतान के मातृत्व के साथ अपने प्रियतम को प्राप्त कर लेती है।

निष्कर्ष -

शेवडे के नारी पात्र बहु आयामी होकर अनेक विशेषताएँ लिये हुए सामने आयी है। साथ ही स्वाभाविकता और प्रामाणिकता में भी बेजोड है। उनके नारी पात्रों में विविधता है। उनकी नारी

1] अ॰गो॰शेवडे,अधूरा सपना, पृ॰ ११३॰

संघर्ष से जूझती, मन की उथल-पुथल से कसमसाती या मनों वेदना को छिपाकर उपर से बिल्कुल सहज होकर व्यावहारिकता निभाती हुई भारतीय नारी के रूप में सामने आती है। शेवड़ेने नारी के बारे में हमेशा आदर्शवादी दृष्टिकोण रखा है।